धूल

नियत कार्य - 1

कक्षा - नवीं (9th)

दिए गए पठित गद्यांशों को पढ़कर उत्तर दीजिए:-

1 हमारी सभ्यता इस धूल के संसर्ग से बचना चाहती है। वह आसमान में अपना घर बनाना चाहती है, इसलिए शिशु भोलानाथ से कहती है, धूल में मत खेलो। भोलानाथ के संसर्ग से उसके नकली सलमे-सितारे धुँधले पड़ जाएँगे। जिसने लिखा था–"धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की," उसने भी मानो धूल भरे हीरों का महत्व कम करने में कुछ उठा न रखा था। 'धन्य-धन्य' में ही उसने बड़प्पन को विज्ञापित किया, फिर 'मैले' शब्द से अपनी हीनभावना भी व्यंजित कर दी, अंत में 'ऐसे लरिकान' कहकर उसने भेद-बुद्धि का परिचय भी दे दिया। वह हीरों का प्रेमी है, धूलि भरे हीरों का नहीं।

प्रश्न

(क) इसमें आज की सभ्यता पर क्या व्यंग्य है?

(ख) अपने बड़प्पन को विज्ञापित करने से क्या तात्पर्य है?

(ग) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।

2 गोधूलि पर कितने कवियों ने अपनी कलम नहीं तोड़ दी, लेकिन यह गोधूलि गाँव की अपनी संपत्ति है, जो शहरों के बाँटे नहीं पड़ी। एक प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता के निमंत्रण-पत्र में गोधूलि की बेला में आने का आग्रह किया गया था, लेकिन शहर में धूल-धक्कड़ के होते हुए भी गोधूलि कहाँ? यह कविता की विडंबना थी और गाँवों में भी जिस धूलि को कवियों ने अमर किया है, वह हाथी-घोड़ों के पग-संचालन से उत्पन्न होनेवाली धूल नहीं है, वरन् गो-गोपालों के पदों की धूलि है।

प्रश्न

(क) गोधूलि को गाँव की संपत्ति क्यों कहा गया है?

(ख) पुस्तक विक्रेता ने निमंत्रण-पत्र में गोधूलि-बेला लिखकर क्या गलती की?

(ग) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:-

1. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग छाँटिए–
   उदाहरण: *विज्ञापित– वि (उपसर्ग) ज्ञापित*
   संसर्ग, उपमान, संस्कृति, दुर्लभ, निर्द्वंद्व, प्रवास, दुर्भाग्य, अभिजात, संचालन।
2. लेखक ने इस पाठ में धूल चूमना, धूल माथे पर लगाना, धूल होना जैसे प्रयोग किए हैं।